Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180
PP.No.: 22-24

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

एकात्मता का प्रतीकः महाकुम्भ

डॉ0 राघवेन्द्र प्रताप सिंह
असि.प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र,
बाबू अमर बहादुर सिंह विधि महाविद्यालय, कुण्डा प्रतापगढ़, (उ0प्र0) भारत

महाकुम्भ भारतीय संस्कृति, आध्यात्म और एकता का अद्वितीय प्रतीक है। यह न केवल धार्मिक आयोजन है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। भारत में प्रत्येक 12 वर्षों में आयोजित होने वाला यह समागम में करोड़ों श्रद्धालु एक साथ स्नान करतें है, जहाँ जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, आर्थिक स्थिति आदि का भेदभाव समाप्त हो जाता है और सभी श्रद्धालु एक समान आध्यात्मिक यात्रा का अनुभव करते हैं।

कुंभ का अर्थ होता है घड़ा। समुद्र मंथन के बाद अमृत कुंभ से अमृत की बूंदे बूंदे जहां जहां छलकी वहां कुंभ मेला लगता है। सम्राट हर्षवर्धन के कार्यकाल से ही कुंभ का आयोजन हो रहा है, जिसका वर्णन चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग ने भी किया था।

कुंभ मेले में सम्पूर्ण विश्व एक कुटुम्ब की भॉति बन जाता है। इस पर्व पर हिमालय और कन्याकुमारी की दूरी सिमट जाती है। अरुणाचल प्रदेश और कच्छ एक–दूसरे के पास आ जाते हैं। इस पर्व का आकर्षण ऐसा है कि दूर से और पास से गांव से और नगरों से झोपड़ियों से और महलों से लोग कुंभनगरी मे सिमटते आ रहे हैं। इनकी भाषा वेश रंग–ढंग सभी एक दूसरे से भिन्न है परन्तु इनका लक्ष्य एक है। सभी की मंजिल एक है। इनमें पुरुष भी है और स्त्रियां भी बच्चे भी है और गृहस्थ भी धनवान भी है और धनहीन भी परन्तु सभी मे एक भावना और एक सांस्कृतिक समरसता के दर्शन होते हैं। हमारे देश की एकता की इसकी अनेकता के बीच। एकरसता के इस महान संगम को आदि शंकराचार्य ने एक ऐसा सुगठित रूप प्रदान किया जो पिछले हजारों वर्षों से इस देश को उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक एक मजबूत एकता के सूत्र में जकड़े हुए है।

महाकुम्भ का ऐतिहासिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य– प्रयागराज हिंदुओं का अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यहां गंगा, यमुना एवं सरस्वती का अद्भुत संगम होता है जिसे अत्यंत पवित्र माना जाता है। यहां कुंभ मेले का आयोजन होता है। कुंभ मेले के अवसर पर करोड़ों श्रद्धालु प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक में स्नान करके पुण्य अर्जित करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष तथा प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के मध्य छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुंभ मेले का आयोजन होता है। कुंभ का शाब्दिक अर्थ घड़ा एवं मेले का अर्थ एक स्थान पर एकत्रित होना है। कुंभ मेला अमृत उत्सव के नाम से भी प्रसिद्ध है।

खगोल गणनाओं के अनुसार कुंभ मेला मकर संक्रांति के दिन प्रारंभ होता है। उस समय सूर्य एवं चंद्रमा, वृश्चिक राशि में तथा वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। इस दिवस को अति शुभ एवं मंगलकारी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुल जाते हैं। इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति होती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु अमृत से भरा हुआ कुंभ लेकर जा रहे थे तभी असुरों ने उन पर आक्रमण कर दिया। अमृत प्राप्ति के लिए देव एवं दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरंतर युद्ध होता रहा। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के समान होते हैं। इसलिए कुंभ भी बारह होते हैं। इनमें से चार कुंभपृथ्वी पर होते हैं तथा शेष आठ कुंभ देवलोक में होते हैं। देव एवं दानवों के इस संघर्ष के दौरान भूमि पर अमृत की चार बूंदें गिर गईं। ये बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन में गिरीं। जहां–जहां अमृत की बूंदें गिरीं वहां पर तीर्थ स्थल का निर्माण किया गया। तीर्थ उस स्थान को कहा जाता है जहां मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस प्रकार जहां अमृत की बूंदें गिरीं, उन स्थानों पर तीन–तीन वर्ष के अंतराल पर बारी–बारी से कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। इन तीर्थों में प्रयाग को तीर्थराज के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहां तीन पवित्र नदियों गंगा, यमुना एवं सरस्वती का संगम होता है। इन नदियों में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

कुम्भ मेला चार प्रमुख तीर्थस्थलों पर आयोजित होता है।

1. प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)– गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम पर
2. हरिद्वार (उत्तराखंड)– गंगा नदी के तट पर
3. उज्जैन (मध्य प्रदेश)– क्षिप्रा नदी के तट पर
4. नासिक (महाराष्ट्र)– गोदावरी नदी के तट पर

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

महाकुम्भ प्रत्येक 12 वर्षों में आयोजित होता है, जबकि अर्धकुम्भ 6 वर्षों में और प्रत्येक वर्ष माघ मेला (प्रयागराज में) भी आयोजित होता है।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक एकता : कुम्भ मेला विभिन्न पंथों, सम्प्रदायों और आस्थाओं को एक मंच पर लाता है। इस मेले में सभी मतों और विचारधाराओं के संत, महात्मा और श्रद्धालु एकत्र होते हैं, जो धार्मिक सहिष्णुता और एकता को दर्शाता है।

अखाड़े एवं संप्रदायों की सहभागिता : कुंभ मेला न केवल आस्था और आध्यात्मिकता का पर्व है, बल्कि यह सनातन धर्म की पुरातन परंपराओं और अखाड़ों की शक्ति प्रदर्शन का भी अवसर होता है। अखाड़े उन धार्मिक संस्थाओं को कहते हैं, जिनमें साधु–संतों का एक समुदाय रहता है और वे अपनी विशिष्ट परंपराओं और अनुशासन का पालन करते हैं। कुंभ मेले में अखाड़ों की सहभागिता अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे इस आयोजन के प्रमुख केंद्र होते हैं।

अखाड़ों की भूमिका :

1. शाही स्नान का नेतृत्वः कुंभ मेले की सबसे प्रमुख परंपरा शाही स्नान होती है, जिसे अखाड़ों के संत और नागा साधु पहले करते हैं। यह स्नान धर्मिक आस्था और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक माना जाता है।
2. धार्मिक प्रवचन और गुरु–शिष्य परंपराः अखाड़ों में आध्यात्मिक ज्ञान, योग, ध्यान और वेदों का अध्ययन किया जाता है। कुंभ मेले में ये अखाड़े अपने अनुयायियों को प्रवचन और शिक्षाएं देते हैं।
3. संन्यास परंपरा का पालन और विस्तारः कुंभ के दौरान कई श्रद्धालु अखाड़ों में दीक्षा लेकर संन्यास ग्रहण करते हैं। नागा संन्यासियों की दीक्षा प्रक्रिया भी इसी दौरान संपन्न होती है।
4. धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का प्रदर्शनः अखाड़ों द्वारा शोभा यात्राएँ निकाली जाती हैं, जिसमें साधु–संत घोड़ों, हाथियों और रथों पर सवार होकर आते हैं। यह परंपरा आध्यात्मिक शक्ति, अनुशासन और धार्मिक एकता का प्रदर्शन करती है।

मुख्य अखाड़े और उनका वर्गीकरणः भारत में मुख्यतः 13 प्रमुख अखाड़े हैं, जो तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित होते हैं–

1. **शैव अखाड़े (भगवान शिव के अनुयायी)–** जूना अखाड़ा, अवहान अखाड़ा, अतल अखाड़ा, आनंद अखाड़ा, महानिर्वाणी अखाड़ा, निर्जनी अखाड़ा
2. **वैष्णव अखाड़े (भगवान विष्णु के अनुयायी)–** निरंजनी अखाड़ा, दिगंबर अखाड़ा, नंदा अखाड़ा
3. **उदासीन और सिख परंपरा से जुड़े अखाड़े–** निर्वाणी अखाड़ा, बड़ा उदासीन अखाड़ा, नया उदासीन अखाड़ा

सांस्कृतिक एकता– करोड़ों श्रद्धालु बिना किसी भेदभाव के एक साथ संगम, गंगा, गोदावरी, क्षिप्रा जैसी पवित्र नदियों में स्नान करते हैं। यह भारतीय समाज में समानता और एकता को प्रकट करता है। महाकुम्भ मेला भारत के विभिन्न राज्यों से आए लोगों की भाषाई, खान–पान, वेशभूषा और रीति–रिवाजों को एक मंच पर प्रस्तुत करता है। मेले में शास्त्रीय संगीत, लोक गीत, भजन और कीर्तन होते हैं जो सांस्कृतिक समन्वय को दर्शाते हैं। विभिन्न राज्यों के कारीगर, कलाकार और व्यापारी मेले में अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा मिलता है।योगगुरु और आध्यात्मिक शिक्षक योग शिविरों का आयोजन करते हैं, जहाँ लोग एक साथ मिलकर योग का अभ्यास करते हैं।

सामाजिक और राष्ट्रीय एकता–महाकुम्भ, केवल धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत करता है।

1. जाति–पाति का भेद मिटानाः इस मेले में सभी जातियों, धर्मों और पंथों के लोग एक साथ स्नान करते हैं और संगठित रूप से धार्मिक अनुष्ठान करते हैं।

2. समानता का भाव : गरीब से लेकर अमीर, आम नागरिक से लेकर बड़े राजनेता तक सभी इस मेले में समान भाव से भाग लेते हैं।

3. अनेकता में एकता : भारत विविधताओं से भरा देश है, लेकिन कुम्भ मेला इस विविधता को एकता में बदलने का कार्य करता है।

अंतरराष्ट्रीय प्रभाव और वैश्विक एकता– महाकुम्भ न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के लिए आकर्षण का केंद्र है। हजारों विदेशी पर्यटक, शोधकर्ता और पत्रकार इस मेले का अनुभव करने के लिए आते हैं।

Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180
ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

1. अंतरराष्ट्रीय पर्यटनः लाखों विदेशी पर्यटक इस मेले में भाग लेते हैं, जिससे भारतीय संस्कृति की वैश्विक पहचान बढ़ती है।

2. वैश्विक अध्यात्मिक समुदाय का मिलनः विभिन्न देशों के आध्यात्मिक नेता, योगी और साधु यहाँ आते हैं, जिससे विश्व स्तर पर आध्यात्मिक विचारों का आदान–प्रदान होता है।

कुम्भ मेला स्थानीय अर्थव्यवस्था को बहुत बड़ा योगदान देता है। लाखों श्रद्धालु और पर्यटक मेले में आते हैं, जिससे होटल, परिवहन, हस्तशिल्प और अन्य उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। स्थानीय दुकानदारों, रेहड़ी–पटरी वालों और हस्तशिल्प कारीगरों के लिए यह सुनहरा अवसर होता है। सरकार और निजी क्षेत्र इस मेले के दौरान अस्थायी और स्थायी रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं।

महाकुम्भ, भारतीय संस्कृति, आध्यात्म, समाज और राष्ट्रीय एकता का जीवंत उदाहरण है। यह न केवल धार्मिक आयोजन है, बल्कि यह एक ऐसा मंच है जहाँ लाखों लोग भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक भेदभाव को भूलकर एक साथ आते हैं। कुम्भ मेला भारतीय समाज को जोड़ने, उसकी विविधता को स्वीकारने और उसे एकता में बदलने का कार्य करता है। इस प्रकार, महा कुम्भ न केवल भारत की ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहर है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भी शांति, सहिष्णुता और एकता का संदेश देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महाभारत, अनुशासन पर्व– अध्याय 26
2. महाभारत, वनपर्व 87 / 18–19.
3. पद्म पुराण 6 / 127 / 163.
4. नारद पुराण 2 / 63 / 90.
5. शिव महापुराण 3 / 21

*****